शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसंबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इक्कीसवीं सदी का बाल साहित्य

सुरेश सरोठिया
संगीता राणा
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

बच्चों की रूचि, जिज्ञासा, इच्छा-आकांक्षा, राग-द्वेष, भावना-कल्पना को ध्यान में रखकर लिखा गया साहित्य ही बाल साहित्य है। बालक मानव जाति का अंकुर होता है, उसे ईश्वरीय चमत्कार भी कहते हैं। बालक की मानसिक शक्ति, उसकी जागरूकता और जिज्ञासा भाव अद्भुत होते हैं। बालमन इतना चंचल होता है कि उसे ठीक प्रकार से समझ पाना बहुत कठिन है। बाल साहित्य में चरित्र अथवा व्यक्तित्व निर्माण के विभिन्न तत्वों को समाहित करने की क्षमता होती है, जिससे बच्चे प्रेरणा प्राप्त करके मानव समाज की नींव बनते हैं। बच्चों के आत्मज्ञान और स्वनिर्माण का सबसे बड़ा साधन साहित्य ही है। साहित्य द्वारा ज्ञानसमृद्धि के अतिरिक्त अन्तः शक्तियों का विकास भी होता है। बच्चों के बहुमुखी और सर्वांगीण विकास में साहित्य का विशेष योगदान है। इसी माध्यम से उन्हें जीवन मूल्यों की एक दिशा मिलती है। प्रस्तुत शोध पत्र में इक्कीसवीं सदी में लिखे जा रहे बाल साहित्य पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

निरंकर देव सेवक ने बाल मनोविज्ञान को रेखांकित करते हुए लिखा है, "बच्चे जिसे दृष्टि से सूरज, चाँद-तारों, आकाश, बादल, पर्वत-सागर और नदियों को देखते हैं, बड़े उन्हें हजार बार देख चुकने के बाद भी उस दृष्टि से नहीं देख पाते। भक्ति श्रद्धा, आस्था और विश्वास के जो परदे बड़ों की आँखों पर पड़े रहते है, बच्चों की आँखों पर नहीं होते। फूल-कलियों के सौंदर्य, पेड़-पौधों की हरियाली, चिड़ियों की चहचहाहट और कुत्ते-बिल्ली के रंग तथा हावभाव से जो मौन-संदेश बच्चों के मन को प्राप्त होते रहते है, वे बड़ों के मन को नहीं होते। अनुभव, ज्ञान, आयु और आकार में बच्चों से कई गुना बड़ा होकर, धूल में खेलता, शैतानियाँ करता, बात-बात पर मचलता बालक बन जाना बड़ी कठिन साधना है।"

"बच्चे राष्ट्र की सम्पत्ति होते हैं। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उस देश के बच्चों की देखभाल, भरण-पोषण, उचित शिक्षा-दीक्षा, सही मार्ग दर्शन पर निर्भर रहता है। अंग्रेजी की एक कहावत है कि - 'चाइल्ड इज फादर ऑफ़ द मेन' अर्थात् बच्चा मनुष्य का जनक होता है, इसका सीधा अर्थ है कि जिस प्रकार एक छोटे से बीज में संपूर्ण वृक्ष छिपा रहता है, उसी प्रकार बालक में मनुष्य की समस्त संभावनाएँ विद्यमान रहती है। उचित मात्रा में खुद, पानी, हवा तथा प्रकाश मिलने से बीज पल्लवित होकर पौधा बनता है और कालांतर में विशाल वृक्ष के रूप में पुष्पित और फलित होकर छाया और फल प्रदान करता है ठीक उसी प्रकार बालक की उचित शिक्षा-दीक्षा,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसंबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

देखभाल, समुचित खान-पान से उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है।"

भारतीय दृष्टिकोण

भारत में प्राचीन समय से ही लोरियाँ और परिकथाओं के रूप में बाल साहित्य विद्यमान हैं। बाल साहित्य का आशय बच्चों के लिए लिखा जाने वाला साहित्य है। लोरियाँ और दादी-नानी की कहानियों से शुरू होकर पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों के माध्यम से यह बच्चों के हाथों में पहुँचता है। बच्चों का मनोरंजन ज्ञानवर्धन और चरित्र गठन करने की दिशा में श्रेष्ठ बालसाहित्य प्रभावी भूमिका निभाता है। भारतीय साहित्य में अनेक ऐसी कृतियाँ हैं जो सैकड़ों वर्षों से बालकों के साथ-साथ, वृद्ध तथा युवा वर्ग का भी मनोरंजन कर रही है। 'पंचतंत्र', 'हितोपदेश', 'कथासरित्सागर', सिंहासन बत्तीसी आदि ऐसी ही कथा-कृतियाँ हैं ? जो आज भी बालमन को आकृष्ट करती है, पंचतंत्र की रचना के पीछे बाल साहित्य के निर्माण का ही उद्देश्य था। 'पंचतंत्र' विश्व की सबसे प्राचीन बालसाहित्य की पुस्तक मानी जाती है। इसलिए आचार्य विष्णुशर्मा की 'पंचतंत्र' में दी गई परिभाषा, बालसाहित्य की प्रथम परिभाषा, मानी जा सकती है। पंचतंत्र में विष्णुशर्मा ने लिखा है -

"यत्नवे भाजने लग्नः संस्कारों नान्यथा भवेत्।
कथाच्छलेन बालानां नीति स्तदिह कश्यते।।"

अर्थात जिस प्रकार किसी नवीन पात्र के कोई संस्कार नहीं रहते उसी प्रकार बच्चों की स्थिति रहती है। इसीलिए उन्हें तो कथा, कहानी आदि के द्वारा ही नीति के संस्कार बताना चाहिए। अतः स्पष्ट है कि नीति कथाएँ ही बालसाहित्य का मूलाधार है और नीति कथाओं से परिपूर्ण, बालकों की जिज्ञासा को शांत करने वाला साहित्य बालसाहित्य है। बाल जीवन पिघलते हुए लौहे जैसा होता है, आप उसे जिस सांचे में ढालना चाहे ढाल सकते हैं। सांचे का कार्य साहित्य करता है। चारित्रिक दृढ़ता लाने का सर्वोत्तम संगम होता है, माध्यम का कार्य बालसाहित्य करता है। स्वस्थ बालसाहित्य द्वारा हम उन्हें भविष्य के सफल नागरिक बनने के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं।

डॉ. श्रीप्रसाद के अनुसार, "वह समस्त साहित्य, जिसमें बालसाहित्य के तत्व हैं, अथवा जिसे बालकों ने पसंद किया है, भले ही जिसकी रचना मूलतः बालकों के लिए न हुई, बालसाहित्य है।"

श्री शिवशंकर मिश्र के अनुसार, "श्रेष्ठ बाल साहित्य वह है जिसे पढ़कर बच्चों में सद्गुण उभरे तथा उन्हें सहकार्य की प्रेरणा मिले उनकी आकांक्षाएँ बलवती हो।"

मूर्धन्य कवि शमशेर बहादुर सिंह का कथन है, "बालसाहित्य को लिखने के लिए आपको कहीं न कहीं बालरूप् में स्वयं होना पड़ेगा। बच्चों के दिल में बैठकर जीवंत रूप से समर्पण करना पड़ेगा। बच्चों के मनोविज्ञान, उनकी भाषा, उनके लहजे समझना हर किसी के वश की बात नहीं।"

आज बालसाहित्य लेखन पहले जैसा नहीं है। आज के बालसाहित्य को सजाने सँवारने में जहाँ पुरानी पीढ़ी के बालसाहित्य का विशेष स्थान है, वहीं नई पीढ़ी के बालसाहित्यकारों ने नये प्रतीकों, नये बिंबों तथा मौलिक उद्भावनाओं से बालसाहित्य की नई जमीन खोजी है। अतः यह स्पष्ट होता है कि आज बालसाहित्य की विषय परिधि बदल चुकी है। नये युग के अनुसार साहित्य में परिवर्तन का सूर्य जगमगाने लगा है। वह बच्चे के मनमस्तिष्क पर ऐसे संस्कार मड़ता है, जिसका प्रभाव चिरस्थायी रहता है। आज के बदलते युग में वह संस्कार के साथ-साथ बच्चों में भावना प्रधानता और कल्पनाशक्ति भी जागृत

करता है। पं. जवाहरलाल नेहरू जो बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू थे। उन्होंने दिल्ली में 'बालभवन' एवं 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट' की स्थापना की। जहाँ से आज भी उच्चकोटि का बालसाहित्य प्रकाशित हो रहा है।

पाश्चात्य दृष्टिकोण

पाश्चात्य देशों में बालसाहित्य समृद्ध है। अंग्रेजी में बालसाहित्य लिखने की परम्परा सैकड़ों वर्ष पुरानी है। पाश्चात्य देशों में अमेरिका और इंग्लैण्ड का बालसाहित्य अंग्रेजी में है और रूस का रूसी भाषा में। विद्वानों के अनुसार इंग्लैण्ड का बालसाहित्य संसार में सबसे अधिक विकसित है। पाश्चात्य जगत में प्रचलित 'गुलीवर की कहानियाँ', राबिन्सन, क्रूसो, एलिन इन द वंडरलैंड', 'रोबिनहुड' 'सोहराब और रूस्तम' आदि प्रसिद्ध हैं। शायद इसीलिए पालहेजार्ड ने कहा था, "बच्चों की पुस्तकों के द्वारा इंग्लैण्ड का पुनर्निर्माण किया जा सकता है।

अंग्रेज विद्वान के अनुसार, "किसी देश की समृद्धि और उसकी सभ्यता के विषय में जानने की जिज्ञासा हो तो उस देश के बच्चों को देख लीजिए। आपको तुरंत ही ज्ञात हो जाएगा कि वह देश कितना खुशहाल है।" इन कथनों से स्पष्ट होता है कि किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार, रहन-सहन, उसकी बातचीत और संस्कारों का प्रभाव बालक पर सहज रूप में दिखाई देता है।

कार्नेलिया मीग्स ने ठीक ही कहा है, "अंततः बालसाहित्य की कसौटी बालक ही है। वे ही यह निर्णय करते हैं कि कौन साहित्य बालसाहित्य है, कौन नहीं - अभिभावक, उपदेशक यहाँ तक कि लेखक भी यह निर्णय नहीं कर सकते हैं।"

खलील जिब्रान ने बच्चों के मनोविज्ञान को स्पष्ट किया है, "बच्चे स्वतंत्र होते हैं। वे हर कदम पर युक्त होकर सांस लेते हैं, जीते हैं और विभिन्न स्थितियों के बारे में अपनी परिभाषाएँ, अपने अर्थ निर्मित करते हैं।"

इन परिभाषाओं के द्वारा स्पष्ट किया गया है कि बच्चों का संसार बड़ों से सर्वथा भिन्न होता है। आकाश की तरह निर्मल, विशाल होता है। वे प्रत्येक काम को अपने नजरिये से देखते हैं। इसलिए बालसाहित्य ऐसा हो जिससे बच्चों को बौद्धिक विकास, नैतिकता का उत्थान एवं चरित्र निर्माण हो जिसका पता स्वयं बच्चों को भी न लगे।

वर्डसवर्थ के अनुसार, "बच्चा ईश्वर का अंश लेकर संसार में प्रकट होता है, किन्तु सांसारिक प्रभावों से धीरे-धीरे उसका जीवन मलिन और कुंठित हो जाता है। यहां तक कि प्रौढ़ता प्राप्त करते-करते वह पूर्ण रूप से पार्थिव हो जाता है बालक के लिए सच्ची शिक्षा स्कूलों में नहीं वरन् प्रकृति के साहचर्य से ही संभव हो सकती है।"

बालसाहित्य का स्वरूप

भारतीय समाज की परम्परा है कि बालकों के सर्वांगीण विकास एवं व्यक्तित्व निर्माण के लिए, एक ओर तो विभिन्न संस्कारों की उद्भावना (कल्पना) की गई और दूसरी ओर ऐसे साहित्य का निर्माण किया, जो कथा, कहानी के माध्यम से उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर एवं मृत्यु से अमरत्व की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करता है। 'पंचतंत्र' एक ऐसी अनमोल एवं अनूठी कृति है जो देश-विदेश की लगभग सभी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। आज भी लाखों बच्चे इसे पढ़कर आनन्द लेते हैं। बालक परमात्मा की सर्वोत्तम कृति है। इसीलिए उसे, बालदेवोभव कहा है। भारतीय आचार्यों ने बालक को उस अंकुर के समान माना है, जो समय के साथ-साथ

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसंबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पल्लवित, पुष्पित एवं फलित होकर न केवल छाया देगा, वरन् वह कई प्रकार से समाज की सेवा भी करेगा। आचार्यों ने बालक की संकल्पशक्ति को जगाने के लिए उसे शब्दों से उत्साहित किया था - "हे बालक! तू ज्ञानवान बन, बलशाली बन, दृढ़संकल्प वाला बन, शूरवीर बनकर शत्रुओं पर विजय करने वाला बन तेरा जीवन ज्योर्तिमय हो, आनंदमय हो, सत्यं शिवम् सुन्दरम से समन्वित हो।"

1 संस्कृत वाड्मय में बालसाहित्य : संस्कृत भाषा संसार की समस्त परिष्कृत भाषाओं में प्राचीनतम भाषा है। इसका धार्मिक दृष्टि से देववाणी, सुरभारतीय अथवा गीर्वाणभारती भी कहा जाता है। संस्कृत भारत वर्ष की प्राचीन एवं समृद्ध भाषा है। यह सभी भाषओं की जननी है। हिन्दू धर्म से संबंध रखने वाले सभी शास्त्रों का अवतरण इसी भाषा से हुआ है। ऋषियों, मुनियों एवं अन्य प्राचीन महापुरूषों के उपदेश प्रायः संस्कृत में ही है, साथ ही यह भाषा सरल, सुबोध एवं परिनिष्ठित भी है। संस्कृत भाषा का अर्थ है -संस्कार की हुई भाषा। इस संबंध में यह मान्यता है कि देववाणी अति प्राचीनकाल में अव्याकृत थी। अतः उसका उपदेश पहले एकता का प्रतीक है। संस्कृत में बालसाहित्य की एक समृद्ध परम्परा रही है। "रामायण, महाभारत, पुराण, उपपुराण आदि इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रामायण की कथा सबसे पहले 'मातृदेवो भवः' 'पितृदेवो भवः' 'आचार्य देवा भवः आदि प्रेरणात्मक मंत्रों से परिवार, समाज और राष्ट्रहित में, शिशओं को एक-दूसरे के प्रति नमन और श्रृद्धा भाव की शिक्षा देती है।"

2 भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य : भारत एक बहुभाषा-भाषी विशाल देश है। इसलिए प्रशासन की सुविधा के लिए इसे कई प्रदेशों में बाँटा गया है। हमारे देश का प्रत्येक प्रदेश अपने आप में अनूठा है। प्रत्येक प्रदेश की भाषा, संस्कृति एंव रीतिरिवाज अलग-अलग है, तथा यहाँ पर तरह-तरह के पहनावे पहनते हैं, परन्तु सबका राष्ट्र एक है। सभी भारतीय हैं, सभी एक झण्डे को प्रणाम करते हैं और सब एक ही राष्ट्रीय गीत गाते हैं, सभी एक ही मातृभूमि के पुत्र हैं और उसी के लिए जीते हैं तथा उसी के लिए मरते भी हैं। इन विविध विशेषताओं के कारण अपना देश, विश्व में एक अलग पहचान बना चुका है। इसीलिए कहा जाता है कि भारत वर्ष में अनेकता में एकता है। हमारे देश में अट्ठारह भाषाएँ संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त हैं - असमिया, बंगला, गुजराती, सिंधी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलगु और उर्दू। इनमें प्राचीनतम भाषाएँ तमिल एवं संस्कृत है। भारतीय बाल-साहित्य तो निश्चित रूप से विभिन्न भाषायी रूपों में, अपनी-अपनी क्षेत्रीय विशेषता को समेटने और पोषित करने वाला सहित्य है।

1 असमिया : असम का प्राचीन नाम 'कामरूप' था। पुराने जमाने में इसे तंत्र-मंत्र का घर मानते थे और आज भी तंत्र-मंत्र का देश कहते हैं। भारत की आधुनिक आर्य भाषाओं में असमिया भाषा सबसे पूर्वी छोर की भाषा है। यह तिब्बत, वर्मी, मंगोल वर्ग की भाषा का अंचल है। 'ब्रहमपुत्र घाटी की जनभाषा होने के साथ-साथ नागालैंड और अरूणाचल की प्रमुख संपर्क भाषा है। असम में दंत कथाएँ प्रचलित हैं जो जादू से आदमी को भेड़ और बकरी बना देता है। इसीलिए असमी जीवन तथा वहां के लोगों के जादू और मंत्रों की कथाएँ देश के कौने-कोने के बच्चों के

लिए निश्चय ही आकर्षक रही हैं। असमिया बालसाहित्य की शुरूआत बीसवीं सदी के प्रारंभ में हुई। माँ द्वारा गायी जाने वाली लोरी ही पहला बालसाहित्य है जो मौखिक था। हर भाषा में लोरी बच्चों को प्रिय लगती है। इन लोरियों को असमिया में 'निचुकनी-गीत' कहते हैं।

"आमार मइना शुब ए/बारीत बगरि रूब ए /बारीत बगरि पकि सरिब/मइनाई बुटजी खाब।"

हमारा मुन्ना सोयेगा ' एक बाड़ी में बेर रोपेगा - ए बाड़ी के बेर पककर झडेंगे - मुन्ना बटोर-बटोर खायेगा।"

2 उड़िया : उड़िया बालसाहित्य का उद्भव लोगों के लोकगीतों, लोक कथाओं, लोरियों तथा शिशु गीतों से माना जाता है। सौम्य, सरल मन वाले आदिम एवं पूर्व ऐतिहासिक काल से ही कला एवं साहित्य के विभिन्न रूप पाए जाते हैं। उड़िया बालसाहित्य की शुरूआत चौदहवीं शताब्दी से मानी गई है, किंतु उस समय समस्त काव्य कृतियाँ ताल पत्र पर लिखी होती थीं। पहले उड़िया बालसाहित्य का रूप मौखिक ही था। धार्मिक एवं पौराणिक काव्य केवल सुनकर ही स्मरण रखे जाते थे। फलतः उस युग का साहित्य मुख्यतः संगीतमय होता था। ये लोक गीत एवं लोक कथाएँ आज भी उड़ीसा में बड़ों-बुढ़ों के कण्ठों में यथावत विद्यमान हैं। इसलिए ये बालगीत कालजयी हैं।

3 बंगला : बंगला भाषा का बालसाहित्य बहुत समृद्ध तथा विश्व प्रसिद्ध साहित्यों में अपना स्थान बनाया है, जो मौलिकता से परिपूर्ण है। बंगला भाषा में बच्चों को बहलाने के लिए घर के बुजुर्गों द्वारा जो आंचलिक कथाएँ, किससे मौखिक रूप से सुनाए जाते थे, वहां से बाल साहित्य की शुरूआत मानते हैं। इन कहानियों - किस्सो से 'हेरी पॉटर' की कहानियों की तरह रोमांच और चमत्कारिक दृश्यों का समावेश बहुतायत से पाया जाता था जिसे सुनने के लिए बच्चे चारों ओर घेराकर बैठकर मंत्रमुग्ध होकर सुनते हैं। इन्हीं कहानी-किस्सों से प्रेरित होकर 'ढाककुमार झुली', दादी माँ की पोटली' जैसी पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। बंगला में जागरूकता अधिक है, इसलिए वहां की लोक कथाओं में भी प्राचीन धार्मिक मान्यताएँ, परंपराएँ तथा रहन-सहन और विश्वासों की सुन्दर झलक दिखाई देती है। बंगला में नीतिकथाओं के माध्यम से बच्चों को शिक्षा दी जाती है।

4 गुजराती : गुजराती भाषा का प्रयोग भारत में नहीं, विदेशों में रह रहे गुजराती अपने व्यापार में अधिकतर आपस में गुजराती भाषा का ही प्रयोग करते हैं। इसलिए भारत से बाहर गुजराती भाषा का प्रचार-प्रसार है तथा विदेशों में गुजराती भाषा में दैनिक तथा साप्ताहिक पत्र भी निकलते हैं, जिनमें बच्चों के लिए भी सामग्री होती है। इस बात से स्पष्ट होता है कि गुजरातियों में अपनी भाषा और साहित् के प्रति अटूट प्रेम है। गुजराती का बाल साहित्य बहुत समृद्ध है, क्योंकि उसकी आधार भूमि स्वस्थ लोककथाओं द्वारा तैयार हुई है। गुजराती में अनेक ऐसी लोककथाएँ प्रचलित हैं, जो बच्चों को मनोरंजन करने के साथ-साथ वहां का इतिहास तथा जीवन का परिचय भी प्रस्तुत करती है। बाल साहित्य पद्य में बालगीत, प्रार्थना, उखाणा (पहेली-मुकरी), जोडकणा (तुकबंदी), हालरडु (लोरी) आदि तथा गद्य में कहानी, चित्रकथा, निबंध, नाटक आदि रूपों में मिलता है।

5 तमिल : पंच द्रविड़ भाषाओं में तमिल का स्थान प्रथम है। दक्षिण भारत की भाषाओं में तमिल सबसे प्राचीन भाषा है। साहित्यिक क्षेत्र में इसका इतिहास पांच हजार वर्ष पुराना है। तमिल

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसंबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

का बाल साहित्य समृद्ध है। तमिलनाडु में कहानियों द्वारा बच्चों को नैतिक मूल्यों से परिचित कराने की परम्परा सी रही है। कन्नड़ की ही भांति तमिल में भी बाल-कहानियों का सबसे रोचक पात्र 'तेनालिराम' है। तमिल में अनेक कहानियाँ सेकड़ो वर्षो से प्रचलित है, जिनमें तेनालिरामन् की बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है साथ ही उसे पढत्रकर बच्चे प्रसन्न होते है। तमिलनाडु में प्रसिद्ध लोककथाएँ अधिकांशतः जीवन के अनुभवों से परिपूर्ण है। जो दादी-नानियों की कहानियों के रूप में ही मिलती है जिनके द्वारा नैतिक शिक्षा दी जाती है।

6 तेलुगु : आंध्रप्रदेश मुख्य रूप से तीन अंचलों में विभक्त है। तेलंगाना, रायलसीमा, तटस्थ प्रदेश। इन तीनों अंचलों में बोलचाल की भाषा तेलुगु है। इन प्रान्तों में प्रचलित बाल साहित्य की भाषा भी तेलुगु है।

तेलंगाना में 'बाड्डेम्म पाटलु' एक विशेष पर्व मनाया जाता है इसमें बच्चों के गीत बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। कुछ गीत खेलों से संबंधित भी होते हैं। जैसे 'चम्मचक्क, बित्ति, गुड गुड्डु गुंचम आदि है। तेलुगु में बच्चों के लिए प्राचीन काल से अनेक कथाएँ प्रचलित है जो हास्य ओर कौतूहल से पूर्ण होने के कारण इतनी लोकप्रिय हैं। जिससे बच्चों का मनोरंजन तो होता है साथ ही कल्पना तथा स्मरण-शक्ति का विकास भी करती है। इनमें - चींटी की कहानी, मक्खी की कहानी, मछली की कहानी, चूहे की कहानी आदि हैं।

7 मणिपुरी : मणिपुर भारत के सुदूर उत्तर-पूर्व में बसा एक छोटा सा राज्य है। मणिपुरी तिब्बों - बर्मन भाषा परिवार की एक समृद्ध भाषा है। यह मणिपुर के बहुसंख्यक मैतै जाति की मातृभाषा है। इसका बहुत पुरातन और महान साहित्य है। इसकी अपनी पुरानी लिपि भी हैं जिसे मैतै मयेक (मैतै लिपि) कहते है। मणिपुरी भाषा भाषी मैतै जाती का मूल धर्म हिन्दू है। मणिपुरी भाषा का बाल साहित्य की शुरूआत सन् 1959 में वांखैमयुम तौमचै सिंह ने - 'इबेन पोक्की वारि' से की है। सन् 1960 में - 'ग्रह यात्रा' प्रकाशित हुई। इबेन्पोक्की वारि का अर्थ है, 'दादी की कहानियाँ'। इसमें 'मणिपुरी समाज में प्रचलित लोक-कथाओं का बालकों को ध्यान में रखकर पुनर्लेखन किया हैं अर्थात् ये 'री-टोल्ड कथाएँ है, जो जिज्ञासा, मानव और मानवेतर शक्ति के विभिन्न आश्चर्यजनक प्रभावों, पशु-पक्षियों की विस्मयकारी भूमिकाओं तथा मनोरंजन आदि से भरपूर हैं, और हल्के रूप में गांवों, जंगलों तथा नगर-जीवन की जानकारी देकर बालकों का ज्ञान बढ़ाने का प्रयास भी किया है।"

8 मलयालम : मलयालम भाषा का लोक साहित्य वहाँ की बहुरूपी संस्कृति परम्पराओं और धार्मिक मान्यताओं से पूर्णतः प्रभावित है। मलयालम का आरंभ शिशु गीत तथा लोरियाँ ही रही है। लोककथाओं के माध्यम से मलयालम संस्कृति, बच्चों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है। वहां जाति तथा धर्म की श्रेष्ठ कथाएँ भी बहुत प्रचलित है, जो बच्चों को कट्टर-धर्मानुयायी बनाती है। अतः लगभग सभी भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य का आरंभिक रूप लोक साहित्य में निहित होता है। मलयालम के बाल साहित्य की वास्तविक प्रगति स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही हुई है। मैथ्यू कुजेवेल्ली ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है, उन्होंने लगभग पांच सौ से भी अधिक बाल साहित्य की पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने एक 'बाल-ज्ञानकोष' भी लिखा है। वे बाल साहित्य को उन्नति के शिखर तक ले गये हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसंबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

9 डोगरी : डुग्गर चिनाव और रावी के मध्य की नैसर्गिक सौन्दर्य युक्त एक ऐसी स्थली है जहां प्रकृति ने खुले हाथों से अपनी संपदा लुटाई है। प्राकृतिक सम्पन्नता से सम्पन्न इस क्षेत्र के लोग भी सुंदर, सरल, स्पष्टवादी, निष्कपट, आतिथ्य भाव से पूर्ण एवं मेहनती हैं। आज के संदर्भों मं भले ही ये क्षेत्र जम्मू-कश्मीर के साथ जुड़ा हुआ है परंतु मूल रूप में ये क्षेत्र पंजाब-हिमाचल और जम्मु-कश्मीर तीनों में ही है। भाषा की दृष्टि से इस क्षेत्र की भाषा डोगरी है।

डोगरी जम्मू क्षेत्र की मुख्य बोल-चाल की भाषा है। अपनी विशेष भाषा, संस्कृति के आधार पर पहचान बनी हुई है। डोगरी भारतवर्ष में बोली जाने वाली आर्य परिवार की भाषाओं में से एक है लेकिन इसका साहित्यिक रूप सीमित है। जम्मू के अधिकांश भाग में डोगरी बोलने वाले बहुत स्वाभिमानी, वीर और राष्ट्रीयता की भावना से भरपूर डोगरा कौम के लोग रहते हैं। भारतीय भाषाओं की तरह डोगरी भाषा भी समृद्ध है। डोगरी बाल साहित्य को तीन खण्डों में बांटा जा सकता है : 1. लोक साहित्य के रूप में उपलब्ध बाल साहित्य, 2. अनुवाद साहित्य के रूप में उपलब्ध बाल साहित्य, 3. मौलिक साहित्य के रूप में उपलब्ध बाल साहित्य।

10 कोंकणी : भारतीय प्रायद्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित गोवा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक पर्यटक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। प्राचीनकाल में गोमांचल, गोकपाट्टन, गोपकपुरी आदि नामों से प्रसिद्ध इस स्थान के संदर्भ में एक पौराणिक कथा प्रसिद्ध है। यह स्थल भगवान परशुराम द्वारा अपने बाणों के संधान से समुद्र के पानी को हटाकर निर्मित हुआ। तीन ओर से समुद्र से घिरा यह क्षेत्र महाराष्ट्र और कर्नाटक की सीमा से जुड़ा हुआ है।

11 कश्मीरी : कश्मीर और लद्दाख भारत के अभिन्न अंग है। जम्मू के डोगरी, कश्मीर घाटी में कश्मीरी और लद्दाख में भोटी भाषा का चलन है। कश्मीरी भाषा वैदिक कालीन है। कश्मीरी में संस्कृत के शब्दों का बाहुल्य हैं। कश्मीर का नाम आते ही विश्वविख्यात ग्रंथ 'राजतरंगिणी' का स्मरण होता है। इसमें समाज और संस्कृति का सजीव वर्णन किया गया है। कश्मीरी भाषा अपनी लोक-कथाओं तथा लोक-गीतों के लिए धनी है। अनेक कथाएँ वही जन्मी हैं और वे आज भी अपने विशुद्ध रूप में हैं। कश्मीरी लोककथाओं में वहां के जीवन, प्रकृति तथा संस्कृति का परिचय मिलता है। इन लोक कथाओं में 'हुमा' चिड़िया बच्चों के लिए आकर्षण की पात्र है। कश्मीर में उल्लु को जादू सिखाने वाला, तोते को चालक पक्षी माना है।

12 सिंधी : सिन्धी भाषी लोग देवनागरी, गुरूमुखी तथा अरबी फारसी लिपि का इस्तेमाल करते थे। सन् 1853 में सिंध के चीफ कमिश्नर सर बार्टल फ्रेअर के प्रयत्नों से सिंधी भाषा के लिए वर्णमाला और लिपि तय हुई जिसके बाद ही बाल साहित्य छपना आरंभ हुआ। सिंधी भाषा के नये स्वरूप को सिखाने के लिए - बाबनामों (1853) पुस्तक प्रकाशित की गई, जो नंदीराम सेवहाणी की लिखी थी। भेरूमल महेरचंद ने - गोलन जा गूंदर (गुलामों का दुख-दर्द 1894) किया। मिर्जा कलीच बेग की - लबाखान दरजी, तिलिस्म गुड्डी, टे देवया राकास, नीलो पखी, सिंदबाद जहाजी, शैतान जीनानी, रूस्तम आदि है। दीवान कौड़ोमल चंदनमल खिलनाणी की - बाशणि यूं आखाणियूं टहिक ई टहिक(1906), बाराणा गीत, सिंधी गुझारंतु, फूलमाला है।

13 उर्दू : उर्दू भारत की ऐसी भाषा है जिसमें देश प्रेम, भाई चारा तथा धर्म निरपेक्षता का

सबक है। उर्दू ने हमेशा हिन्दुस्तान के गौरव के गीत ही गाये हैं। उर्दू दिलों को जोड़ने वाली जुबान है। उर्दू ही देश की वह भाषा है जो इलाकाईयत से पाक है, जो बिना तफरीफ मजहबों-मिल्लत लिखी, पढ़ी और बोली जाती है, दक्षिण हो या उत्तर पूरब हो या पश्चिम भाषाओं के बाद उर्दू सबसे अधिक बोली जाती है। देश की अन्य भाषाओं की तरह उर्दू का बाल साहित्य भी काफी समृद्ध है।

14 मराठी : मराठी बाल साहित्य की शुरूआत महाराष्ट्र पर ब्रिटिश शासन काल से आरंभ होती है। मराठी बाल साहित्य पहले मौखिक रूप में था। मराठी बाल साहित्य भी समय के साथ-साथ बदलता रहा है। मराठी बाल साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है तथा विविधता एवं व्यापकता भी है। वासुदेव गोविन्द आप्टे द्वारा सं. 'आनन्द' बाल-मासिक ने बाल साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनके बाद नारायण हरि आप्टे का - 'सुखचा मूलमंत्र' तथा 'इनामदारचा बालू' बहुत प्रसिद्ध हुए। आचार्य अत्रे का लिखा नाटक 'गुरू दक्षिणा' भी बच्चों ने खूब पसंद किया है। सन् 1920 से 1945 के बीच मराठी बाल साहित्य की सभी विधाओं में अभूतपूर्व प्रगति हुई। बाल साहित्य को समृद्ध बनाने में अनेक लेखक प्रयत्नशील हैं।

निष्कर्ष

सभी भारतीय भाषाओं में समान रूप से एक ही तथ्य निकलता है कि आरंभिक रूप लोकसाहित्य ही था। प्रायः सभी भाषाओं में धार्मिक तथा नीतिकथाएँ प्रचलित थी। पंचतंत्र तथा हितापदेश की कहानियों ने न केवल भारतीय, बल्कि विश्व की अनेक भाषाओं के बाल साहित्य को प्रभावित किया है। सभी भाषाओं को मिला-जुला रूप, सभी ने स्पष्ट किया हैं कि बच्चे जितने सीधे होते हैं, उन्हें समझना उतना ही कठिन होता है। इसलिए बाल-मनोविज्ञान समझना उतना ही आवश्यक है जितना एक स्वस्थ समाज के लिए एक स्वस्थ पीढ़ी का निर्माण जो बाल साहित्यकार अपने बचपन में लौट सकता है अर्थात् बच्चों के मानसिक धरातल पर पहुंच सकता है, परकाया प्रवेश कर सकता है, वह श्रेष्ठ बाल साहित्य लिख सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम, डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव।

2. बाल साहित्य समीक्षा अप्रैल।

3. बाल साहित्य: विविध परिदृश्य, डॉ.सुरेन्द्र विक्रम।

4. हिन्दी बाल साहित्य: एक अध्ययन, डॉ.हरिकृष्ण देवसरे।

5. भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम।

6. जीवन मूल्य आधारित बाल साहित्य लेखन

7. भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम, विनोदचन्द्र पाण्डेय

8. भारतीय बाल साहित्य का इतिहास, जय प्रकाश भारती।